ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5 अंक : 6 अगस्त-सितम्बर 2015 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पारासर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

पितृ दोष निवारण के कुछ खास उपाय	डा. महेश पारासर	2
श्रावण में सम्पन्न करें इच्छापूर्ति	डा. रचना के भारद्वाज	4
अच्छे स्वास्थ्य हेतु वास्तु एंव ज्योतिषीय उपाय	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
वास्तु दोष से मुक्ति के सरल उपाय कर सुख समृद्वि पाँए	डा. अरविन्द मिश्र	6
कालसर्प दोष या योग	पवन कुमार मेहरोत्रा	7
ज्योतिष में गौ–महिमा	पुष्पित पारासर	8
अपान मुद्रा	विष्णु पाराशर	8
लाल किताब की ज्योतिषीय उपयोगिता	पं. आर. एस. द्विवेदी	9
मनुष्य की पाँच प्रमुख आवश्कताएं	मोहिनी पाराशर	10
भगवान श्री कृष्ण का लालन पालन वैश्य कुल में हुआ था	सुरेश अग्रवाल	12
भगवान के भक्त अष्टकुल नाग	चन्द्रशेखर तिवारी	12
नक्षत्रों से रोग विचार	अजय दत्ता	13
राइस बॉल्स	शुभी गुप्ता	14
प्रार्थनाः कब कैंयू और कैसे	श्रीमती रमा गुप्ता	14
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	15.16
पूजा – सामग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

पितृ दोष निवारण के कुछ खास उपाय

1. याद रखें घर के सभी बडे बुजर्ग को हमेशा प्रेम, सम्मान, और पूर्ण अधिकार दिया जाय, घर के महत्वपूर्ण मसलों पर उनसे सलाह मशविरा करते हुए उनकी राय का भी पूर्ण आदर किया जाय प्रतिदिन उनका अभिवादन करते हुए उनका आशीर्वाद लेने उन्हे पूर्ण रूप से प्रसन्न एंव संतुष्ट रखने से भी निश्चित रूप से पितृ दोष में लाभ मिलता है।

2. अपने ज्ञात अज्ञात पूर्वजों के प्रति ईश्वर उपासना के बाद उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखने उनसे अपनी जाने अनजाने में की गयी भूलों की क्षमा मांगने से भी पितृ प्रसन्न होते है।

3. सोमवती अमावस्या को दूध की खीर बनाकर, पितरों को अर्पित करने से भी इस दोष में कमी होती है।

4. सोमवती अमावस्या के दिन यदि कोई पीपल के पेड़ पर मीठा जल मिष्ठान एंव जनेऊ अर्पित करते हुये ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः मंत्र का जाप करते हुए कम से कम सात या 108 परिक्रमा करे। तत्पश्चात् अपने अपराधों एंव त्रुटियों के लिये क्षमा मांगें तो पितृ दोष से उत्पन्न समस्त समस्याओं का निवारण हो जाता है।

5. प्रत्येक अमावस्या को गाय को पांच फल भी खिलाने चाहिये।

6. अमावस्या को बबूल के पेड़ पर संध्या के समय भोजन रखने से भी पित्तर प्रसन्न होते है।

7. प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण को भोजन कराने व दक्षिणा वस्त्र भेंट करने से पितृ दोष कम होता है।

8. पितृ दोष से पीडित व्यक्ति को प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढाकर महामृत्युंजय का जाप करना चाहिये।

9. आप चाहे किसी भी धर्म को मानते हो घर में भोजन बनने पर सर्वप्रथम पितरों के नाम की खाने की थाली निकालकर गाय को खिलाने से उस घर पर पितरों का सदैव आर्शीवाद रहता है। घर के मुखियां को भी चाहिये कि वह भी अपनी थाली से पहला ग्रास पित्तरों को नमन करते हुए कौओं के लिये अलग निकालकर उसे खिला दें।

10. पितृों के निमित घर में दीपक अगरबत्ती को प्रातः काल पूजा के समय ऊँ पितृय नमः कम से कम 21 बार उच्चारण करें।

11. पशु पक्षियों को खाना खिलायें।

12. श्रीमद् भागवत गीता का ग्यारहवां अध्याय का पाठ करें।

13. पितृ पक्ष अथवा अमावस्या के दिन पितरों को ध्यान करके सामर्थ्यनुसार ब्राह्मण पूजन के बाद गरीबों को दान करने से पितृ खुश होते है। ब्राह्मण के माध्यम से पितृपक्ष में दिये हुये दान पुण्य का फल दिवंगत पितरों की आत्मा की शांति के लिये किया जाता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार आज के दिन पिंडदान, तिलांजली और ब्राह्मणों को पूर्ण श्रद्धा से भोजन कराने से जीवन में सभी सांसारिक सुख और भोग प्राप्त होता है।

14. हिन्दु मान्यता के अनुसार मृत्यु के बाद भी स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। इसके लिये प्रसन्नचित होकर हव्य से देवताओं का कव्य से पितृगणों का तथा अन्न द्वारा बंधुओ का भंडारा करें। इससे परिवार एंव सगे संबधियों, मित्रों को भी विशेष फल की प्राप्ति होती है। इसके फलस्वरूप परिवार में अशान्ति, वंश वृद्धि में रूकावट, आकस्मिक बीमारी, धन से बरकत न होना, सभी भौतिक सुखों के होते हुए भी मन असंतुष्ट रहना आदि परेशानियों से मुक्ति मिल सकती है।

15. शनिवार के दिन पीपल की जड़ में गंगा जल, काला तिल चढायें। पीपल और बरगद के वृक्ष की पूजा करने से पितृ दोष की शान्ति होती है।

16. याद रखिए पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने, उन्हे पूर्ण रूप से संतुष्ट करने उनकों प्रसन्न रखने वाले व्यक्तिपरहमेशा दैवी कृपा बनी रहती है। उसके कार्यो में कोई भी अवरोध नहीं होता है। उसकी सर्वत्र जयजयकार होती है।

17. **ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय** की एक माला का नित्य जाप करें।

18. जब भी किसी तीर्थ पर जाएं तो अपने पितरों के लिये तीन बार अंजलि में जल से उनका तर्पण अवश्य ही करें।

19. पितृपक्ष में अपने पितरों की याद में वृक्ष, विशेषकर पीपल लगाकर, उसकी पूर्ण श्रद्धा से सेवा करने से भी पितृदोष संमाप्त होता है।

महेश पारासर

नजर एवं टोटके का सरल उपाय

अगर आपके घर के किसी सदस्य या आप पर बुरी नजर का प्रभाव है तो नीचे लिखे टोटके अपनाकर बुरी नजर से मुक्ति पा सकते है।

1. नारियल को एवं चौसठा यंत्र को लाल कपड़े में बांधकर सिलकर घर के दरवाजे पर लटका दें तो घर पर बुरी नजर का प्रभाव नही पड़ता है।

2. नजर दोष से बचने के लिये सिद्ध नजर एवं टोना–टोटका रक्षा कवच धारण करें।

3. थोडी सी साबुत फिटकरी लेकर नजर लगी दुकान पर से 11 बार उसारें। फिर किसी चौराहे पर जाकर उसे उत्तर दिशा में फेंकर पीछे देखें बिना लौट जाएं। दुकान पर लगी नजर दूर हो जायेगी। ऐसा शुक्रवार और शनिवार को करें ।

4. थोडी सी राई, नमक, आटा और सात सूखी लाल मिर्च लेकर नजर दोष से पीडित व्यक्ति के सिर पर से सात बार घुमाकर आग में डाल दें। नजरदोष होने से मिर्च जलने पर गंध नहीं आयेगी।

5. मंगलवार को हनुमान मन्दिर जाकर हनुमान जी के कन्धे का सिंदूर लाकर लगाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर हो जाता है।

6. घर के निकट वृक्ष की जड़ में शाम को थोडा से कच्चा दूध डाल दें फिर गुलाब की अगरबत्ती जलाएं। नजर दोष दूर हो जाएगा।

7. नए मकान की चौखट पर काले धागें से पीली कौड़ी बांधने से उस पर बुरी नजर नहीं लगती है।

अमृत वचन

कर्म से स्वभाव बनता है, स्वभाव से ही चरित्र बनता है, चरित्र से भाग्य बनता है जो बदलता नहीं। इसलिए कर्म ही भाग्य का निर्माण करते हैं। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय गुरू जी,

भविष्य निर्णय के सभी अंक कच्छे लेखो के कारण संग्रहित करने योग्य होते है। पत्रिका में रूद्राक्ष के ऊपर विशेष अंक प्रकाशित करें।

राघव शर्मा, दिल्ली

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का जून–जुलाई अंक प्राप्त किया। पत्रिका अच्छी लगी। गुरू जी आपका मासिक राशिफल बहुत सटीक होता है।

मनोज तिवारी, मथुरा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. भविष्य में अच्छा कैरियर बनाने हेतु उचित मार्ग दर्शन दें? कु.दिशा सोनी, पानीपत

उत्तर– मोती व माणिक रत्न तुरन्त धारण करें। सूर्य को रोजाना अर्घ्य दें। गले में सर्व कार्य सिद्ध लाकेट धारण करें।

प्रश्न 2. मेरी शादी का योग कब है?

राजीव शर्मा, अजमेर

उत्तर– जुलाई 2017 के बाद शादी होने की सम्भावना है। कुंडली मिला कर ही विवाह करें। पन्ना रत्न धारण करें तथा गाय को चारा खिलायें। **डा.महेश पारासर**

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. मेरे पति का स्वभाव बहुत झगडाल और चिड़चिड़ा है। क्या वास्तु की बजह से या और कोई कारण है? शिवानी कश्यप, दिल्ली

समाधान– आपके घर का ब्रह्म स्थल दूषित है। वहाँ बना हुआ शौचालय पश्चिम मध्य में कर लें। आराम मिलेगा किसी वास्तु शास्त्री से घर का विजिट भी करवा लें।

समस्या– 2. मेरी पुत्री के विवाह में बहुत स्कावट आती है। उपाय बतायें। **राधाशर्मा, आगरा**

समाधान– पुत्री का कमरा दक्षिण पश्चिम में है। उसे उत्तर पश्चिम में स्थानान्तरित कर लें। इसके अलावा उसकी कुण्डली का अवलोकन किसी भी ज्योतिषी से भी करवा लें। वह जो उपाय बतायें। वह भी करें। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

श्रावण में सम्पन्न करें इच्छापूर्ति की साधनाएं

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तु शास्त्राचार्य,
अंक विशारद
नई दिल्ली

श्रावण महीने में चार महत्वपूर्ण सोमवार आ रहे है और ये सोमवार अपने आप में अद्वितीय योगों से संपन्न है। इन सोमवारो को की गई उपासनाये एंव साधनाये विशेष फल प्रदान करने वाली होती है। इन दिनों किये गये प्रयोग भी शीघ्र शुभ परिणाम देने वाले होते है। प्रत्येक सोमवर अमूल्य धरोहर है। अतः हमें सभी सोमवारों का सदुपयोग करना चाहिये जिससे मनुष्य जीवन को लाभ मिल सकें।

पहला सोमवार- दिनांक 03–08–15 को श्रावण का पहला सोमवार है श्रावण माह का यह पहला सोमवार अपने आप में दुर्लभ व महत्वपूर्ण सौम्य योग से सम्पन्न होने के कारण इस सोमवार को जो भी प्रयोग किया जाता है। वह अपने आप में सिद्धिदायक होता है। निम्न कार्यो के लियें और जीवन में सभी दृष्टियों से सफलता के लिये इस सोमवार का प्रयोग किया जाना चाहियें।,

1. अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति एंव पति एंव पत्नि की पूर्ण आयु के लिये एवं संतान प्राप्ति एंव पुत्र संतान के लिये।
2. संतान की सुरक्षा, उनकी सफलता एंव पुत्र की उन्नति के लियें।
3. कन्या के शीघ्र विवाह और उसके योग्य वर प्राप्ति के लियें।
4. प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लियें।
5. अकाल मृत्यु निवारण तथा घर में पूर्ण सुख शांति के लिये।

दूसरा सोमवार- दिनांक 10–08–2015 को श्रावण का दूसरा सोमवार है। श्रावण माह का यह दूसरा सोमवार अति महत्वपूर्ण है। सिद्धियां प्राप्त करने की दृष्टि से यह अति महत्वपूर्ण दिवस है। इस सोमवार को तो प्रयोग करना समस्त बाधाओ को मिटाकर, एकछत्र सफलता पाना है। निम्न उद्वेश्यों की पूर्ति के लिये इस सोमवार का प्रयोग किया जा सकता है।

1. शत्रुओ पर हावी हाने व शत्रुओं को परास्त करने के लियें।
2. मुकदमे में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लियें शीघ्रतिशीघ्र फैसले के लियें।
3. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा, राज्य संकट आदि की समाप्ति के लियें।
4. भविष्य में किसी भी प्रकार अडचन, बाधा, अपमान, भय आदि की निवृत्ति के लियें।
5. एक्सीडेंट एंव अकाल मृत्यु निवारण के लिये एवं पूर्ण रोग मुक्ति एंव पारिवारिक सुख समृद्धि के लिये।

तीसरा सोमवार- दिनांक 17–8–2015 को श्रावण का तीसरा सोमवार है। इस सोमवार को विशेष योग बन रहे है। ऐसे योगो से सम्पन्न होने की वजह से यह सोमवार अपने आप में सिद्धि दिवस और सिद्धि योग बन गया है। ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्वेश्यों की पूर्ति के लियें विभिन्न प्रयोग संपन्न किये जा सकते है।

1. लक्ष्मी प्राप्ति के लियें, लक्ष्मी को घर में स्थायित्व देने के लिये।

शेष पेज 19 पर.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

अच्छे स्वास्थ्य हेतु वास्तु एंव ज्योतिषीय उपाय

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता; अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

निरोगी काया व अच्छा स्वास्थ्य एक वरदान है। आधुनिक युग की इस भागदौड में व इस जीवन शैली में हमने अपने अच्छे स्वास्थ्य को बहुत पीछे छोड दिया है। हर समय की मानसिक चिन्ताओं एंव खान पान ने हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी को प्रभावित किया है। बडे बडे रोग जैसे कैंसर, हार्ट–प्रोब्लम, लिवर डैमेज तथा मधुमेह, ब्लड प्रेशर जैसे रोग भी जन्म कुंडली के विवेचन से पता चल जाते है। यदि हम समय पर स्वास्थ्य हेतु अपनी जन्मकुंडली का विवेचन कराते रहें व उसके उपाय करते रहें तो इस असाध्य रोगों के कष्टो को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रत्येक रोग किसी न किसी ग्रह से सम्बन्धित होता है तथा किन्ही विशेष दिशाओं में सोने से, भोजन करने यहां तक कि भोजन पकाने से भी हम रोगी हो सकते है। इस अंक में हम आपकों रोजमर्रा की जिंदगी में अपनाने के लिये कुछ उपाय बता रहे हैं जो आपकों अच्छे स्वास्थ्य में काफी लाभ दे सकते है।

1. रोजाना सूर्य भगवान को ताबें के लोटे से अर्घ्य दें। ध्यान रहे कि जल की छीटें पैरों में न पडे। लालपुष्प, रोली, गुड इत्यादि लाल वस्तु जल में मिलाकर सूर्य को अर्ध दिया जा सकता है। अर्घ्य देने के पश्चात् 8 बार मंत्र बोले **"ह्रीं हंसः घृणिः आदित्यः नमः"** सूर्य को नियमित चढाबें से सिर दर्द, हृद्रय सम्बन्धी रोग व नेत्र सम्बन्धित रोगों से मुक्ति मिलती हैं।

2. भोजन पकाते व खाते समय मुख हमेशा पूर्व दिशा में रहना चाहियें। इससे भोजन पौष्टिक बनता है व आसानी से पचता है। इससे पेट सम्बन्धित रोग होने की सम्भावना कम रहती है।

3. शौचालयों में सीट पर बैठते समय हमारा मुख हमेशा उत्तर या पूर्व दिशा में होना चाहिये। दक्षिण व पश्चिम में मुख होने पर व्यक्ति का पेट खराब रहता है। बवासीर की समस्या व बार बार शौचालय जाने की समस्या बनी रहती है।

4. बीम के नीचे न तो बैठे न ही सोयें वरना हर समय शारीरिक थकान महसूस होगी व किसी भी कार्य को पूर्ण मनोयोग से नहीं कर पायेंगें।

5. सोते समय सिर सदैव दक्षिण या पूर्व दिशा में रखें इससे गहरी नींद आयेगी व स्वास्थ्य उत्तम कोटि का रहेगा।

6. गले में सिद्ध महामृत्युंजय का लाकेट धारण करने से असाध्य से असाध्य रोग से छुटकारा मिल जाता है।

7. लग्नेश का रत्न धारण करने से स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहता है। विशेष रूप से लग्न का रत्न गले में धारण करने से व्यक्ति को स्वास्थ्य में काफी लाभ मिलता है।

8. लिवर सम्बन्धित बीमारियां जैसे पीलियां, हैपेटाइटिस बी इत्यादि होने पर गाय को रोजाना चने की दाल खिलायें, धार्मिक स्थलों पर चने की दाल, वेसन के लडडू, केले, हल्दी की गांठ, पीले पुष्पों इत्यादि का दान करें। इससे तुरन्त लाभ मिलेगा।

9. जिन लोगों को सदैव सर्दी जुकाम रहता हो वे लोग सूर्यास्त के बाद सड़क के कुत्तों को कच्चा व ठण्डा दूध पिलायें।

10. महां मृत्युंजय यन्त्र का रोजाना अभिषेक करने से भी व्यक्ति मृत्युशैया तक से लौट आता है। अभिषेक के लिये रूद्राक्ष की माला का प्रयोग करें नित्य कम से कम 108 बार मंत्र का जाप करते हुए यन्त्र का जल में कच्चे दूध को मिलाकर अभिषेक करें पर ध्यान रखें कि स्वास्थ्य के लिये किये जाने बाले अभिषेक में जल की मात्रा अधिक व कच्चे दूध की कम होती है।

11. गले में रूद्राक्ष धारण करने से ब्लड प्रेशर कन्ट्रोल मे रहता है।

12. स्त्री जनित रोग एंव गर्भाशय सम्बन्धित रोगों को दूर करने के लिये रोजाना त्रिकोण मंगल यंत्र की पूजा करें।

13. अच्छे स्वास्थ्य के लिये हमेशा तांबे के लौटे में पिरामिड का जल प्रातः होते ही पियें पिरामिड जल 12 घण्टे से 24 घण्टे के मध्य तैयार हो जाता है। यह अच्छे स्वास्थ्य के लिये बहुत जरूरी रहता है। विदेशों में इसका बहुत प्रचलन है।

14. चर्म रोग एलर्जी स्नायुनिर्बलता भूलना श्वास रोग यह सब बुद्ध ग्रह अशुभ होने पर होता है। बुद्ध ग्रह को शुभ स्थिति में लाकर इन समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

15. गठिया का रोग एक आम समस्या बन गई है यह रोग शनि ग्रह एंव राहु केतु की अशुभता की वजह से होता है। अतः

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

वास्तु दोष से मुक्ति के सरल उपाय कर सुख समृद्धि पाए

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

**वास्तुपुरूष नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभों।
मद्गृह धनधान्यादि समृद्धि कुरू स्वाहा।।**

वास्तु वेदों का एक अंग है, स्थापत्य या वास्तु को ललित कला माना गया है। वास्तु का विशेष संबंध ज्योतिष से है। वास्तु के सार्वभौमिक सिंद्वातों को व्यक्तिनिष्ठ रूप ज्योतिष की सहायता से दिया जा सकता है।

भारतीय वास्तुशास्त्र पूर्ण रूप से पांच तत्वों पर आधारित है– वायु अग्नि, पृथ्वी, आकाश, एंव जल। इन्ही पांच तत्वों से मानव शरीर का भी निर्माण होता है। इन तत्वों में से यदि किसी भी एक तत्व की कमी हो जाए तो मृत्यु हो सकती है। इसी प्रकार भवन निर्माण में वास्तुशास्त्र के अनुसार इन पांच तत्वों का संतुलन नही होने पर उसमें वास करने वालों पर वास्तु पुरूष का कोप होता है।

यहाँ वास्तु दोषों से मुक्ति के कुछ सरल उपायों का विवरण प्रस्तुत है

1. वास्तुदोष से मुक्ति पाने हेतु वास्तु पूजन विधि पूर्वक अवश्य करवाना चाहिए। इससे दोषों में कमी आती है।

2. ऑफिस व घर में क्रिस्टल के अधिक से अधिक प्रयोग से वास्तु दोष दूर होते है।

3. पूजा घर वास्तु सम्मत उत्तर पूर्व में रखें। भवन के ईशान कोण में एक छोटा मन्दिर अवश्य होना चाहिए। नित्य आरती करनी चाहिए और घंटी बजानी चाहिए।

4. घर के मुख्य द्वार पर सिंदूर से स्वास्तिक को नौ अंगुल लंबा तथा नौ अंगुल चौड़ा बनाने से वास्तुदोष के प्रभाव में कमी आती है।

5. ब्रह्म स्थान को खुला साफ तथा हवादार रखना चाहिए।

6. घर के वायव्य कोण में अतिथि घर कंवारी कन्याओं का शयन कक्ष, रोदन कक्ष, शौचालय व ऊँचे वृक्ष लगाएं जा सकते है।

7. घर का भारी सामान नैऋत्य कोण, दक्षिण या पश्चिम में रखना चाहिए।

8. सीढियों के नीचे पूजा घर, शौचालय, व रसोईघर नही बनाना चाहिए।

9. भोजन सदा पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके ही करना चाहिए। पूरे परिवार को एक समय साथ भोजन अवश्य करना चाहिए। इससे घर में समृद्धि बढ़ती है।

10. सोते समय सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ होना चाहिए। मतान्तर से अपने घर में पूर्व दिशा मे सिर करके सोना चाहिए और उत्तर दिशा मे सिर करके नही सोना चाहिए।

11. घर में गुग्गल या कपूर सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य जलायें इसका धुआं वास्तु दोष दूर करता है।

12. घर के मुख्य द्वार पर तुलसी का वृक्ष लगाने से वास्तु दोषो में कम आती है।

13. घर में हल्दी की गांठ व दाल चीनी की छाल रखने से सदैव माँ लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

14. जो व्यक्ति नित्य वास्तुदेव के नाम पर काले तिल, जौ और घी को मिलाकर अग्नि को समर्पित करता है। उसके घर में वास्तु दोषो का प्रभाव नही होता है।

15. कैश बाक्स, कैश वाक्स या तिजौरी में कुबेर यंत्र रखने से वह खाली नहीं रहती। ऐसे कैश बाक्स को उत्तर दिशा में लगाना शुभ होता है।

16. शनिवार को किसी भूखे को भोजन खिलायें उसकी यथा सम्भव मदद करें।

17. गायत्री मंत्र अथवा महामृत्युंजय मंत्र एक घंटे सुबह शाम बजायें।

18. गृहस्वामी या गृहस्वामिनी को रसोईघर में भोजन करना चाहिये।

19. शयन कक्ष में प्रेम भावना उभारने बाले चित्रों का होना आवश्यक है। झगड़े अथवा डरावने गंदे चित्रो का प्रयोग तनाव उत्पन्न करता है।

20. बेड में बिछी बेडशीट का चयन इस प्रकार होना चाहिये। बुजुर्गो के लिये पीले रंग की, विद्यार्थियों के लियें हरे रंग की, लेखन अध्ययन के लिये हल्के नीले रंग (आसमानी भी) व नवविवाहितो के लिये लाल गुलाबी रंग की बेड शीट प्रयोग की जानी चाहिये।

21. घर के किसी भी कक्ष में टूटा फूटा सामान नही होना चाहिये।

22. अविवाहित कन्याओं के कक्ष में सफेद चांद का चित्र

शेष पेज 19 पर................

कालसर्प दोष या योग

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

जन्म कुण्डली में किसी भी भाव में ग्रहों का मिलाना योग कहलाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अच्छे या बुरे प्रभावों से गुजरना पडता है। शास्त्रानुसार व्यक्ति को पूर्व जन्म के कर्मो को भुगतना ही पड़ता है।

भरणी नक्षत्र के स्वामी राहु होते है और देवता काल। कर्क राशि में स्थित आश्लेषा नक्षत्र के स्वामी केतु होते है और देवता सर्प अर्थात राहु और केतु दोनों के संयुक्त रूप से निर्मित योग को कालसर्प कहा जाता है। अर्थात् जब कुंडली में राहु एंव केतु या केतु एंव राहु के एक और बाकी सात ग्रह आ जाते है। यानि कुल 360 अंश में से 180 के बीच होते है और बाकी सब 7 ग्रह इनके बीच में होते है तो एक तरह का लोक लग जाता है। सभी ग्रह इस लोक में बन्द होकर संर्घष की स्थिति बनाते है तो इस प्रकार की स्थिति कालसर्प योग कहलाती है। चूंकि यह स्थिति काफी कष्टप्रद होती है इसलिए इसे कालसर्प दोष कहना भी गलत नहीं होगा। राहु केतु जिन भावों का प्रतिनिधित्व करते है उससे सम्बन्धित कष्ट देते है।

कालसर्प योग के शन्ति उपाय

काल सर्प दोष सुनने से तो बहुत भयावह लगता है। पर इससे डरने की आवश्यकता नहीं है क्योकि यह घातक जरूर है पर महाकाल नहीं इससे डरना शास्त्रगत नहीं है। क्योकि जहां एक ओर यह कष्ट देता है। वहां कहीं कही जातक को विश्वप्रसिद्धी, पद, धन सम्पत्ति भी प्रदान करता है परन्तु इसके कुप्रभावों से सावधान रहते हुए उनका समय समय पर उपाय अवश्य करना चाहिए। जिससे मनुष्य को सुख समृद्धि प्राप्त हो सकें।

1. कालसर्प दोष होने पर कालसर्प यंत्र का रोजाना विधिवत् पूजन करें एवं कालसर्प योग की शन्ति अवश्य करायें।
2. गले मे सिद्ध रत्न जड़ित कालसर्प लॉकेट धारण करें।
3. राहु एंव केतु के बीज मंत्रों का रूद्राक्ष की माला से नित्य जाप करें।
4. नागपंचमी पर शिवलिंग का रूद्राभिषेक एंव नागों का पूजन अवश्य करें।
5. शिवलिंग पर तांबे या चांदी के सर्प चढायें।
6. महामत्युंजय महामंत्र का सवा लाख बार रूद्राक्ष का माला से जाप करें।
7. श्रावण मास में शिवजी का रूद्राभिषेक कराने से शिव कृपा प्राप्त होती है एंव कालसर्प योग शान्त होता है।
8. प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को कालसर्प यंत्र का विधिवत पूजन कर बहते जल में विसर्जित करें।
9. नागपंचमी, शिवरात्रि, श्रावणमास या किसी भी बुध वार को सपेरों से नाग नागिन का जीवित जोडा लेकर वनों में मुक्त करायें।
10. नाग पंचमी के दिन सतनाजा, नीला या भूरा वस्त्र, काले तिल, नरियल, सामर्थय अनुसार दान करें।
11. पंचमी के दिन पित्रों का आव्हान करते हुए एंव नाग देवताओं को नमन् करते हुए प्रार्थना करें कि मोक्ष की प्राप्ति हो।
12. घर के मुख द्वार की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक लगायें।
13. नाग पूजन एंव वनों में दूध या दूध से बने पदार्थो को नागों की बॉबियों के पास रख कर आयें।
14. शिव उपासना एंव लगातार **ऊँ नमः शिवाय ऊँ महा मृत्युंजय** के जाप से यह योग शिथिल हो जाता है। ❋❋❋

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

ज्योतिष में गौ-महिमा

पुष्पित पारासर

दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि , वास्तु ऋषि,
अंक विशारद, नजर दोष एवं हस्ताक्षर विशेषज्ञ

ज्योतिष प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

1. ज्योतिष में गौधूलिका समय विवाह के लिये सर्वोतम माना गया है।

2. यदि यात्रा के प्रारम्भ में गाय सामने पड़ जाये अथवा अपने बछडें को दूध पिलाती हुई सामने पड़ जाये तो यात्रा सफल होती है।

3. जिस घर में गाय होती है उसमें वास्तु दोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

4. जन्मपत्री में यदि शुक्र अपनी नीच राशि कन्या पर हो, शुक्र की दशा चल रही हो या शुक्र अशुभ भाव (6,8,12) में स्थित हो तो प्रातः काल के भोजन में से एक सफेद रंग की रोटी गाय को खिलाने से शुक्र का नीचत्व एंव शुक्र सम्बन्धी कुदोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

5. पितृ दोष से मुक्ति सूर्य, चन्द्र, मंगल या शुक्र की युति राहु से हो तो पितृ दोष होता है। यह भी मान्यता है कि सूर्य का संबन्ध पिता से, मंगल का सम्बन्ध रक्त से होने के कारण सूर्य यदि शनि, राहू या केतु के साथ स्थित हो तो दृष्टि संबन्ध हो तथा मंगल की युति राहु या केतु से हो तो पितृदोष होता है। इस दोष से जीवन संघर्ष में बन जाता है। यदि पितृ दोष हो तो गाय को प्रतिदिन या अमावस्या को रोटी,गुड,चारा आदि खिलाने से पितृदोष समाप्त हो जाता है।

6. किसी की जन्मपत्री में सूर्य नीच राशि तुला पर हो अशुभ स्थिति में हो अथवा केतु की परेशानियां आ रही हो तो गाय में सूर्य केतु नाडी में होने के फलस्वरूप गाय की पूजा करनी चाहिये। दोष समाप्त हो जाता है।

7. यदि रास्ते में जाते समय गौ माता आती हुई दिखाई दें तो उन्हे अपने दाहिने से जाने देना चाहियें। यात्रा सफल होगी।

8. यदि बुरे स्वप्न दिखाई दें तो मनुष्य गौ माता का नाम लें, बुरे स्वप्न दिखने बंद हो जायेगें।

9. गाय के घी का नाम आयु भी है। **'आयुर्वै घृतम्'**। अतः गाय के दूध घी से व्यक्ति दीर्घआयु होता है। हस्तरेखा में आयु रेखा टुटी हुई हो तो गाय का घी काम में लें तथा गाय की पूजा करों।

10. देशी गाय की पीठ पर ककुद् होता है। वह वृहस्पति है। अतः जन्मपत्रिका में यदि बृहस्पति अपनी नीच राशि मकर में हो या अशुभ स्थिति में हो तो देशी गाय के इस बृहस्पति भाग एंव शिवलिंग रुपी ककुद् के दर्शन करने चाहिये। गुड़ तथा चने की दाल रख कर गाय को रोटी भी दें।

11. गौ माता की नेत्रों में प्रकाश स्वरुप भगवान सूर्य तथा ज्योत्सन्ना के अधिष्ठाता चन्द्र देव का निवास होता है। जन्मपत्री में सूर्य चन्द्र कमजोर हो तो गौ नेत्र के दर्शन करें लाभ होगा।

(कल्याण अंक 2014 से)

❋❋❋

अपान मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर

ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

यह मुद्रा विशेष रूप से उदर सम्बंधित विकारों में विशेष लाभ देती है। हमारे शरीर में पंच वायु का समावेश होता है जिनमें अपान वायु का कार्य शरीर से विषैले, गन्दे तत्व को बाहर निकालने में दबाब उत्पन्न करना होता है जैसे मल, मूत्र, पसीना, आदि। अतः अपान का बहुत महत्व होता है। आज के समाज में हमारे खा पान व रहन सहन की बजह से यह वायु निष्क्रिय होती जा रही है। उचित खान पान न होने से मल मूत्र आदि सफाई से बाहर नही आते है तथा एसी आदि के प्रयोग से पसीना भी नही आता जिसकी बजह से शरीर में यह गंदगी रक्त में मिलकर उसे गाढा बनाती जाती है जिसके कारण रक्त चाप व ह्रदय घात होने की सम्भावनाएं बढ जाती है। कब्ज आदि विकार भी बढ़ जाते है।

विधि– सुख पूर्वक किसी भी आसान में बैठकर अंगुष्ठ से मध्यमा ब अनामिका अंगुली का स्पर्श करें इसे मृगी मुद्रा भी कहते है। जिस प्रकार हवन में आहुति दी जाती है। उसके बाद लम्बी गहरी सॉस का आवागमन करते रहें। 15 से 30 मिनट सुबह शाम इस मुद्रा का अभ्यास करें। लम्बे अभ्यास से यह मुद्रा अमृत समान लाभ देती है।

लाभ–

1. इस मुद्रा को करने से कब्ज आदि गैस, उदर पीड़ा सभी में विशेष लाभ मिलता है।

2. बवासीर, मधुमेह, मूत्रावरोध, गुर्दा दोष दॉतो के विकार भी दूर होते है।

3. पेट व ह्रदय रोगियों के लिये विशेष लाभदायक है।

4. पसीना निकालने में लाभ दायक रक्त चाप नियन्त्रित आदि।

5. नाभि का हटना गर्भाशय के दोष आदि भी ठीक होते है।

6. मुख नाक कान ऑख आदि के विकारों में भी लाभ मिलता है।

7. शीतली कुम्भक प्राणायाम के साथ यह मुद्रा विशेष लाभ दायक होती है।

8. यह मुद्रा करते हुए अधिक पानी का सेवन करें हरी सब्जियां खाये तथा सही समय पर भोजन करें उससे विशेष लाभ होगा।

❋❋❋

लाल किताब की ज्योतिषीय उपयोगिता

पं. आर. एस. द्विवेदी
नजदीक हिमालय स्कूल
ललहेड़ी रोड़, खन्ना

जून–जुलाई 2015 में प्रकाशित लेख का शेष भाग..

शुक्र को लाल किताब ने शादी पत्नी का कारक माना है शुक्र को सुख सुविधा तथा सुन्दरता का भी कारक माना है अगर शुक्र पीडित है तब जातक को पत्नी सुख में कमी रहती है। औरतों से उसके लडाई झगडा चलता रहता है। धन की कमी बनी रहती है। सूर्य शुक्र एक साथ बैठने से शुक्र खराब हो जाता है या सप्तम घर में राहु केतु शनि या सूर्य बैठा है तब भी पत्नी सुख में कमी बनी रहती है। ऐसे जातक को अपने पत्नी से सलाह मशवरा करके काम करना चाहिये। झगड़ा लडाई से दुर रहना चाहिये। लाल किताब मंगलिक को नही मनाती है। लाल किताब कहती है लडके के कुण्डली गुरू अच्छा है तब उसे पत्नी सुख प्राप्त होगा। अगर कारक कमजोर है तभी मंगल सूर्य शनि राहु और केतु खराब करेंगें। जिसका शुक्र अच्छा होता है। उनके हाथ में जीवन रेखा गोल व लम्बी होती है तथा शुक्र को बहुत स्थान प्राप्त होती है। गोल रेखा जब घेरती है तब शुक्र पर्वत को अधिक स्थान प्राप्त होता है। शुक्र पर्वत को उठा होता है तथा व्यक्ति के हाथ में पर्वत उठे होते है और हाथ की चमड़ी गुलाबी और चमकीली नही होती है। जब शुक्र खराब होता है जब हाथ में जीवन रेखा खडी होती है शुक्र को कम स्थान प्राप्त होता है। हथेली गुलाबी चमकीली नही होती है। बल्कि खुरदरी रूखी या सूखी होती है। हाथ में पर्वत दबे होते है। जो व्यक्ति अपने रिश्तेदारी एंव परिवार के सदस्यों के साथ अच्छा संबंध बनाकर रखता है, स्वार्थी नही होता है बल्कि मददगार होता है आलसी लापरवाह नही होता है महत्वकांक्षी और मेहनती होता है उसका शुक्र ग्रह अच्छा होता है। अगर आपका शुक्र कमजोर है या खराब है तो अपने अन्दर अच्छे शुक्र का गुण अपनायें।

शनि को लाल किताब ने सेवक का कारक माना है जो व्यक्ति जितना अधिक मेहनत करता है अनुशासन में रहता है अर्थात प्रत्येक कार्य को समय पर करता है अंहकारी अभिमानी नही होता है। अपने नीचे कार्य करने वाले व्यक्तियों से प्यार करता है उनकी मदद करता रहता है उनका शनि अच्छा होता है। जो अपने कार्य के प्रति गम्भीर नही होता है उसे शनि महाराज गरीबी के रूप में बीमारी के रूप में अपमान के रूप में दण्ड देकर गम्भीर बनाते है। कोई व्यक्ति अस्पताल कच्चेहरी नही जाना चाहता है न अपमान चाहता है न अपने कार्य में असफलता चाहता है लेकिन अधिकतर व्यक्तियों को इन्ही चीजों का सामना करना पडता है। क्योकि व्यक्ति अपने मन मर्जी के हिसाब से चलना चाहता है। जबकि शनि महराज व्यक्ति को मन मर्जी के हिसाब से नही बल्कि विधि विधान के हिसाब से चलाना चाहते है। फिर व्यक्ति को दण्ड देकर उसे गम्भीर बनाते है लाल किताब शनि के बारे में कहती है कि शनि महाराज ठोकर देकर व्यक्ति की कमी दूर करने के बारे मे बताते है। व्यक्ति को बादाम खाकर अक्ल नहीं आती है ठोकर से अक्ल आती है। जिन लोगों के अपने नौकर से अधीनस्थ कर्मचारियों से अपने चाचा से नहीं बनती है या उनका सुख नहीं प्राप्त होता है। उनका शनि खराब होता है। शनि ग्रह को ठीक करने के लिये दान पुण्य के साथ अपने कर्मो में भी सुधार करना भी आवश्यक होता है। शनि के बारे में लिखा है कि शनि को ठीक रखने के लिये मीट शराब अन्डा बीडी सिगरेट तम्बाकू का सेवन नही करना चाहिये अर्थात् इश्क बाजी से दूर रहना चाहिये। किसी पुरूष को किसी पर स्त्री से संबंध नही बनाना चाहिये। शनि के दशम घर के बारे में लिखा है कि जातक दूसरे लोगों को जितना सम्मान देगा उतना उसे भी सम्मान प्राप्त होगा। हस्तरेखा के हिसाब से भाग्य रेखा शनि पर्वत के ऊपर जाती है। भाग्य रेखा उनके हाथ में होती है। जो जीवन में उन्नति करने के बारे में सोचते हैं तब उन्नति के लिये बुजुर्ग लोगों विद्वान के सलाह से काम गम्भीरता के साथ दूर दृष्टि के साथ करते है। संसार में सबसे अधिक व्यक्ति शनि से प्रभावित होकर जीवन यापन कर रहें है। शनि से प्रभावित व्यक्ति शारीरिक मेहनत का काम करते हैं दिमागी काम करने की शक्ति उनके अन्दर नही होती है। इसलियें मजदूर किसान शरीर से मेहनत करने बाले व्यक्ति का संबंध इन्ही लोगों से होता है। जिसका शनि खराब होता है उसका मध्यम अंगुली टेढी होती है हथेली लम्बी पतली होती है। हाथ तथा अंगुलियों के ऊपर पट रेखा तिरछी रेखा अधिक होती है। जब शनि गुरू या बुध से प्रभावित होता है या शुक्र से प्रभावित होता है तब व्यक्ति अच्छी और दिमागी नौकरी करता है। जब दो ग्रह मिल जाते है तब उनके फल में बदलाब आता है। जब जन्म कुण्डली में शुक्र बुध एक साथ बैठे होते है। तब शनि अच्छा हो जाता है। मंगल बुध आपस में शत्रु हैं इसलिये बुद्धि खराब कर देते है। जब शुक्र बुध मित्र है इसलिये व्यक्ति अपनी बुद्धि का सद्प्रयोग करके अपना काम करेगा। शनि को ठीक करने के लिये बबूल कीकर की दातुन करें। दातुन करने से दातों को व्यायाम होगा शनि अच्छा हो जायेगा। जो व्यक्ति कंजूस होता है। शनि उसका खराब होता है। ऐसे व्यक्ति की हथेली बीच में गहरी होती है। जो व्यक्ति उदार होता है शनि उसका अच्छा होता है। अगर व्यक्ति गदार बन जाये तब उसके हाथ की गहरी हथेली समतल हथेली बननी शुरू

शेष पेज 18 पर.....

मनुष्य की पांच प्रमुख आवश्कताएं

मोहिनी पाराशर
आगरा

शारीरिक आवश्यकता– मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं में सबसे पहले भूख, प्यास, और काम है तथा अन्य शारीरिक आवश्यकताएं भी सम्मिलित है। यह वह आवश्यकताएं है जिनके अभाव में व्यक्ति का जीवित रहना संभव नही है। भोजन जिसके बिना हमारे शरीर को पोषण नहीं मिलता जिसके बिना शरीर की वृद्धि रूक जाती है। भोजन हमारे जीवन व शरीर के लिये अत्यन्त आवश्यक है। जल जिसके बिना जीवन संभव नही अर्थात् जल ही जीवन है हमारा शरीर पंच तत्वो से मिलकर बना है जिसमें जल का अपना विशेष महत्व है। काम इच्छा भी उतनी ही महत्वपूर्ण शारीरिक आवश्यकता है जितनी कि भूख और प्यास जिसके बिना सृष्टि का निर्माण संभव नही है।

सुरक्षा की आवश्यकता– जब व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकता पूरी हो जाती है। तो उसके सामने दूसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता सुरक्षा की होती। खुद को किसी भी तरह सुरक्षित रखना फिर चाहे वह कोई दुर्घटना हो या प्राकृतिक आपदा। सुरक्षा की दृष्टि से देखा जाये तो व्यक्ति भवन निर्माण करबाता है क्योकि वह उसमें सुरक्षित महसूस करता है। व्यक्ति स्वंय अपने परिवार व भविष्य को सुरक्षित रखने हेतु बीमा करवाता है अर्थात् अपने वाहनों का भी। प्रत्येक व्यक्ति स्वंय को, अपने परिवार को, वर्तमान व भविष्य को सुरक्षित करने के लिए अधिक प्रयास करता है।

सदस्य होने तथा पाने या देने की आवश्यकता– जब व्यक्ति की प्रथम दो आवश्यकताएं पूरी हो जाती है। तब व्यक्ति की तीसरी आवश्यकता उत्पन्न होती है। इस तरह की आवश्यकता के कारण व्यक्ति परिवार, स्कूल, धर्म, प्रजाति, राजनैतिक पार्टी आदि के साथ तादात्मय स्थापित करता है। व्यक्ति को ऐसा अनुभव होता है कि वह समूह या परिवार का प्रमुख सदस्य है। इतना ही नहीं व्यक्ति अपने समूह या परिवार के सदस्यों के प्रति स्नेह दिखाने लगता है व उनसे स्नेह पाने की इच्छा भी रखता है।

सम्मान की आवश्यकता – जब व्यक्ति की प्रथम तीन आवश्यकताएं पूरी हो जाती है। तब व्यक्ति अपनी चौथी आवश्यकता पूरी करने की कोशिश करता है। इस आवश्यकता में व्यक्ति में

शेष पेज 19 पर.....

आगरा का लाल दीपांश अग्रवाल उपलब्धि बेमिसाल

दोआबा पब्लिक स्कूल, होशियारपुर पंजाब में अध्ययन रत आगरा के लाल दीपांश अग्रवाल ने सी.बी.एस.ई की हाई स्कूल 2015 परीक्षा के सभी विषयों में CGPA 10 में से 10 अंक प्राप्त कर A-1 ग्रेड प्राप्त कर अपने विद्यालय के पुरूष छात्र वर्ग में अपनी श्रेष्ठता का परचम फहराया है। विद्यालय की अन्य गतिविधियों जैसे क्रिकेट, बेडमिन्टन, मंच संचालन, नृत्य व बादविवाद प्रतियोगिताओं में भी पुरूस्कार प्राप्त किए है।

इस उपलब्धि पर होश्यिारपुर अग्रवाल सभा, वैश्य फैडरेशन, पेपर मिल क्लब तथा क्रिकेट क्लब द्वारा भी दीपांश को सम्मानित किया जा रहा है। दीपांश बैडमिन्टन टूर्नामेण्ट में अपने विघालय का प्रतिनिधित्व कर चुका है। दीपांश का मानना है कि यदि समयबद्ध अनवरत मेहनत की जाये, तो किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त की जा सकती है। पंजाबी क्षेत्र में हिन्दी भाषी होने के बाबजूद भी उसे कोई कठिनाई नहीं आई– विद्यालय में सभी की सपोर्ट उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही है। इस उपलब्धि को वह अपने मार्गदर्शक शिक्षक गुरूओ, दादा दादी तथा माता पिता के साथ–साथ ईश्वर का आशीर्वाद मानता है। वह चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट बनकर समाज की सेवा करना चाहता है। चण्डीगढ़ के एस डी पब्लिक स्कूल में मैरिट के आधार पर वाणिज्य विषय में कक्षा 11 में उसे प्रवेश मिल गया है। 16 बर्षीय दीपांश, अवकाश प्राप्त स्टेट बैंक अधिकारी एंव सक्रीय समाज सेवी सरला बाग निवासी श्री सुरेश अग्रवाल का पौत्र और श्री मनोज अग्रवाल , वरिष्ठ महाप्रबन्धक, खेतान पेपर मिल, होशियारपुर का पुत्र है।

दीपांश अग्रवाल को मिली सफलता का श्रेय डा. महेश पारासर जी के ज्योतिषीय परामर्श के कारण ही सम्भव हो सका है। भविष्य दर्शन को आभार।

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का **नक्शा** आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

उत्तर प्रदेश का प्रथम सिद्ध श्री नाग माता मन्दिर पर कालसर्प योग की शान्ति का आयोजन प्रत्येक वर्ष में श्री नाग पंचमी पर्व एवं महाशिवरात्रि पर्व पर किया जाता हैं।

कालसर्प योग 48 वर्ष की आयु तक हर क्षेत्र (स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, पदोन्नित) में बाँधायें उत्तपन्न करता है। इसीलिये कालसर्प योग की शान्ति कराना अति आवश्यक है।

अपनी कुंडली में कालसर्प योग जानने के लिये क्लिक करें

http://www.bhavishydarshan.in/InputP2.php?OptHoro=Checked

या सम्पर्क करें

भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा।

फोनः 9719666777, 9719005262

भगवान श्री कृष्ण का लालन पालन वैश्य कुल में हुआ था

सुरेश अग्रवाल
आगरा

यदुवंश में सर्वगुण सम्पन्न देवमीढ़ नाम के एक राजा हुए। ये श्री मथुरा जी में निवास करते थे। इनकी दो पत्नियाँ थी, पहली क्षत्रियवर्ण की दूसरी वैश्यवर्णय की। उन दोनों रानियो के क्रम से यथायोग्य दो पुत्र हुए एक का नाम शूरसेन और दूसरे का नाम पर्जन्य। माता पिता दोनों क्षत्रियवर्ण होने से श्री शूरसेन की क्षत्रिय रहे परंन्तु पर्जन्यजी का जन्म वैश्य वर्ग की माता से हुआ था। अतः वैश्य जाति को प्राप्त होकर इन्हे गोपाल का काम मिला। द्वापर युग में बृज क्षेत्र गोकुल के नरेश नन्द बाबा, जिनकी राजधानी नन्द गांव थी, वैश्य थे। ये नरेश बहुत शक्तिशाली एंव वैभव सम्पन्न थे। इसलिये वासुदेव जी ने अपने पुत्र कृष्ण की कंस से रक्षा के लिये उनको ही उपयुक्त समझा उचित समय पर वासुदेव जी ने स्वंय ही कृष्ण को नन्द बाबा को सौप दिया। वास्तव में नन्द बाबा बृज के इतने प्रभाव शाली और शक्ति सम्पन्न राजा थे कि कंस जैसे महाबलबान राजा की भी उनसे सीधे टक्कर लेने की हिम्मत नहीं हुई। कंस धोखे और चालाकी से नीचता पूर्ण प्रयत्नों से ही कृष्ण को मरवाने का प्रयत्न करता रहा। फिर भी नन्द बाबा ने कंस के नीचता पूर्ण षडयंत्रो का अदम्य साहस से सामना करते हुए कृष्ण का लालन पालन किया। इस कार्य में अदृश्य दैविय शक्तियां भी सहायक थी जिसे नकारा नहीं जा सकता है।

उस समय यादव कुल में कंस इतना शक्तिशाली राजा था कि कोई भी नरेश उसका सामना करने में सक्षम नहीं था। परन्तु गोकुल नरेश नन्द बाबा ने बालक कृष्ण को संरक्षण देकर यह सिद्ध कर दिया कि अराजकतत्वों के राष्ट्र एंव समाज विरोधी कार्यो से किसी भी समुदाय को भयभीत नहीं किया जा सकता है। जन हित के कार्य करने में सकल समाज सदैव अग्रणी रहेगा। कंस ने कृष्ण को मारने के लिये अनेक युक्तियां की परन्तु नन्द के राज्य पर आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा सका क्योकि कंस जानता था कि उसके राज्य में खाद्य पदार्थो की आपूर्ति का एक बहुत बड़ा हिस्सा नन्द गांव से ही आता था। कंस के अमानवीय कार्यो को जानते हुए भी नन्दबाबा ने आपूर्ति बन्द नही की। राजनीति और व्यापार नीति का ऐसा सन्तुलन प्रजा के हित में ही था।

शेष पेज 17 पर.....

भगवान के भक्त अष्टकुल नाग

चन्द्रशेखर तिवारी
आगरा

सर्पभक्तो के आठ वंश है ये भगवान के द्वारपाल है ये भगवान की सेवा में सावधान रहते है। इलापत्रा जी और अनन्त मतवाले शेष जी अनन्त भगवान की कीर्ति का विस्तार करते है। पघ्न और शंकु इनका प्रण प्रसिद्ध हैं ये भगवान के रूप का ध्यान कभी नहीं टालते।

अंशु कम्बल और वासुकि ये भगवान के आज्ञाकारी कोंटक और तक्षक बडे वीर सेवा रूपी भूमि को सदा अपने सिर पर धारण करते है। पुराणों में नागों के आठ कुल प्रसिद्ध है। अनन्त वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पघ्न, महापघ्न, शंख पाल, और कुलिक ये महाराज कश्यप और नाग माता कद्रू की सन्तान है ये पूर्वादि दिशाओं के भी स्वामी है। पघ्न, उत्पल, स्वास्तिक, त्रिशुल महापघ्न, शूल, क्षत और अर्धचन्द्र, क्रमशः ये आढो के आयुध है अनन्त और कुलिष ये दोनो ब्राह्मण, शंख और वासुकी क्षत्रिय, महापघ्न और तक्षक वैश्य और पघ्न और कर्कोटक शूद्र नाग है। अनन्त और कुलिष श्वेत वर्ण, ब्रह्मा जी से उत्पन्न है। वासुकि और शंखपाल रक्त वर्ण अग्नि से उत्पन्न तक्षक और महापघ्न पीत वर्ण तथा इन्द्र से उत्पन्न। पघ्न और कर्कोटक कृष्ण वर्ण यमराज से उत्पन्न है।

भगवान अनन्त का ही नाम शेष है जो भगवान श्री हरि की शैया बने क्षीर सागर में एक हजार मुखों एंव दो हजार जिहा से भगवान हरि का जप करते रहते है और सेवा भक्ति के आदर्श उदाहरण है।

प्रभु ने स्वंय शेष को सेवोपकरण बना लिया वे ही प्रभु के क्षत्र एंव शैया है। राम अवतार में अनुज लक्ष्मण बन कर सेवा की कृष्णवतार में अग्रज संकर्षण बलराम के रूप में संरक्षण के रूप में भार वहन, किया वे ही पाताल लोक में नागराज शेषनाग के रूप में कर्कोटक तक्षक आदि नागों से घिरे वैठे हुए मन बचन शरीर के कर्मो द्वारा भगवान वासुदेव का जप करते रहते है।

व्रतं कर्कोटकद्यैस्ते शेष तक्ष कपन्नगैः।
जपन्तं वासुदेवेति वाङ्मनः कायकर्म भिः।।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

नक्षत्रों से रोग विचार

पं. अजय दत्ता
आगरा

जन्मकुंडली में छठे भाव से रोगों का विचार किया जाता है। जन्मजात रोगों का विचार अष्टम भाव से किया जाता है। भविष्य में होने वाले रोगों का विचार षष्ठ भाव से किया जाता है। जन्मजात रोग दो तरह के होते है शारीरिक व मानसिक। भविष्य में होने वाले रोग भी दो तरह के होते है दृष्टि निमित और अदृष्टि निमित। अदृष्टि निमित रोग अज्ञात होते है। ये रोग पूर्वजन्म के दोषो या बाधक ग्रहों की बजह से होते है। इसके अलावा द्रेष्काण कुडली के आधार पर अंगो का विभाजन करके शरीर का कौन सा अंग रोग से पीडित है यह बतलाया जाता है। रोग विचार के लिये नक्षत्रों की गणना भी आवश्यक है। प्राचीन ऋषियों ने कुछ सूत्र लिखे जिनसे व्यक्ति आसानी से रोग की अवधि का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

गंडमूल नक्षत्र में बीमारी ज्यादा कष्टकारी होती है। इन योगो का ज्ञान करके ग्रहों की शाति करवानी चाहिये। आपरेशन कराते समय भी इस बात का विशेष खयाल रखें। भाव अथवा पीडित राशि पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो रोग अधिक कष्टकारक नही होता है। भावेश या राशि स्वामी जन्मकुंडली में केंद्र या त्रिकोण में या अपनी ही राशि में हो तो पापी ग्रह अधिक कष्टदायी नहीं होते। रोग की शुरूआत जिस दिन हो उससे 14 दिन तक उसके अधिक उग्र होने की संभावना रहती है। अतः शल्य क्रिया के बाद घाव 14 दिन के अंदर भर जाना चाहिये। मंगलवार शनिवार तथा 4,7,14,15 को टालना चाहिये। आर्द्रा, ज्येष्ठा, अश्लेषा और मूल नक्षत्र शल्य क्रिया के लिये उपयुक्त होते है। शल्य क्रिया हो जाने के बाद अस्पताल का त्याग और घर में प्रवेश भी विशेष नक्षत्रों में करना चाहिये। ताकि स्वास्थ्य की प्राप्ति सुलभ हो। रोग से निवृत्ति हो जाने के उपरांत रोग मुक्त स्नान करना चाहिये। ग्रह संबंधित पदार्थ पानी में डालें व उस पानी से स्नान करें। गर्भाधान लग्न भी रोग की सूचना देता है। विशेष रात्रि में समागम करने से श्रेष्ठ पुत्र व पुत्री की प्राप्ति होती है। रजस्वला होने के जितने दिन विलंब से गर्भ धारण होता है बच्चा उतना ही भाग्यशाली होता है। रजस्वला होने से 5/6 दिन बाद गर्भाधान होने पर 15 साल से, 9/10 दिन बाद होने पर 16 साल, 11/12 दिन बाद होने पर 16 साल, 11/12 दिन बाद होने पर 33 साल, 13/14 दिन बाद होने पर 40 साल, 15/16 दिन बाद रात्रि में होने पर 50 साल बाद कोई बीमारी होती है। ऐसा इसलिये होता है क्योकि गर्भ पूर्ण बलवान होता है। कहा भी गया है पहला सुख निरोगी काया। जो स्वस्थ होगा वह अपनी तकदीर का स्वंय निर्माण करेंगा।

नक्षत्र	बीमारी का मोग्यकाल
अश्विनी, आर्द्रा, मूल भरणी, पूर्वाभाद्रपद	1 दिन यदि इन नक्षत्रों में मंगलवार या शनिवार या जन्मवार हो तो बीमारी से मुक्ति नहीं मिलती है।
कृतिका, अश्लेषा	9 दिन
रोहिणी	3 दिन
मृगशिरा	5 दिन
पुनर्वसु, पुष्य, हस्त	7 दिन
मघा, पूर्वाफाल्गुनी	1 महीना
स्वाती, श्रवण	2 महीना
चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा	15 दिन
विशाखा, रेवती, उत्तराषाढा	20 दिन
अनुराधा, शतभिषा	10 दिन
धनिष्ठा, पूर्वाषाढा,उत्तराभाद्रपद	15 दिन

वार व नक्षत्र के योग भी कष्ट का समय बताते हैं।

1. सोमवार को अश्विनी नक्षत्र होने से 21 दिन पीडा रहती है।
2. बुधवार को भरणी नक्षत्र होने से 21 दिन महाकष्ट होता है।
3. गुरूवार को कृतिका नक्षत्र होने से 18 दिन पीड़ा रहती है।
4. शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होने से 7 दिन पीड़ा रहती है।
5. बुधवार को अनुराधा नक्षत्र होने से 8 दिन पीडा रहती है।
6. गुरूवार को ज्येष्ठा नक्षत्र होने से 20 दिन पीड़ा रहती है।
7. गुरूवार को उत्तराषाढा नक्षत्र होने से 9 दिन पीड़ा रहती है।

❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

राइस बॉल्स
(हेल्थी)

शुभी गुप्ता
आगरा

सामग्री

कवरिंग के लिए- पके हुए चावल– 2 बड़े कटोरी, उबले आलू– 3–4 छोटे, नमक– स्वादानुसार

फिलिंग के लिए- उबले आलू– 3–4 मध्यम आलू पकाने के लिए मसाला– हींग, जीरा, हल्दी, लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, गरम मसाला पाउडर, अमचूर पाउडर, नमक।

तलने के लिए- रिफाइन्ड ऑयल, अरारोट पाउडर

विधि

कवरिंग के लिए- चावल के साथ आलू घिस कर डालें, नमक डालें और मिलाए। अपने हाथों से ऐसे मिलाए कि अगर हम लोइ हथेली पर फैलाए तो फैले, टूटे नही। जरूरत हो तो आप थोडा पानी भी डाल सकते है। इस मिश्रण की एक समान लोइयाँ तोड लें।

फिलिंग के लिए- एक कढाई में तेल गर्म करें। फिर इसमें ऊपर बताए सारे मसालें अपने स्वादानुसार डालें। मसालें भुन जाए तो आलू (मसले हुए) डालकर पका लें। आलू पक जाने पर इस मिश्रण के भी एक समान चावल के मिश्रण जैसे हिस्से कर लें।

राइस बॉल्स की विधि : राइस मिश्रण की एक लोई लें, अपने हथेली और अँगूठे की मदद से इसको गोलाई देते हुए अन्दर से खोखला रखें। अब इसमें भुना हुआ आलू मिश्रण डाल कर हल्के हाथों से गोल बॉल जैसा शेप दें। ऐसे ही सारे गोले बाल्स बना लें। अरारोट को एक कटोरी में 2–3 चम्मच लें। अब थोडा पानी डालकर घोल बना लें। एक कढ़ाई में तेल गर्म करें। जब तेल तेज गर्म हो जाए तो इन बाल्स को अरारोट के घोल में डिप करके कढाई में डालें। गोल्डन ब्राउन होने तक तलें। बॉल्स को टिशू पेपर पर निकाल लें। राइस बॉल्स को गर्मागर्म इमली की चटनी या टोमेटो कैचप के साथ सर्व करें। क्रिस्पी राइस बॉल्स तैयार है। ❋❋❋

प्रार्थना: कब क्यू और कैसे

श्रीमती रमा गुप्ता
आगरा

जब भी हम प्रार्थना शब्द को पढते या सुनते है तो हमें थोड़ा भारी सा लगता है। वस्तुतः हम प्रार्थना के अर्थ को नहीं समझते। हम यह समझते है कि प्रार्थना एक भारी शब्दों में लिखा हुआ कोई मन्त्र या काव्य है। जो हमे प्रभु को सुनाना है। यदि आप ऐसा समझते है तो यह बिल्कुल गलत है क्योकि प्रार्थना हमारे दिल की आवाज है जो हमें अपने प्रभु तक पहुँचाती है। वास्तव में प्रार्थना क्या है। , प्रार्थना हमारे अपने मन की वह फरियाद है जो हमें ईश्वर से जोडती है। प्रार्थना धन्यवाद है उसके लिये जो हमें जीवन मे प्राप्त हुआ है। प्रार्थना करने से हमें यह अहसास होता है कि ईश्वर कोई और नहीं हमारा अपना बिल्कुल अपना है। हमेशा हमारे अंग संग है। हमारा प्यारा पिता है जो हमेशा अपने बच्चों का ध्यान रखता है। पर एक मां की तरह अपनी ममता हर दम उंडेलता रहता है। प्रार्थना हमें अपने प्रभु के अपने ठाकुर के अपने प्यारे ईश्वर के पास बहुत पास पहुंचा देती है।

प्राचीन समय में भी प्रार्थना का बहुत महत्व था और आज भी है। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे आदि ने भी प्रार्थना के महत्व को माना है। आजकल के इस व्यस्त जीवन में बहुत ज्यादा भागदौड है हमे पूजा पाठ के लिये समय नहीं मिल पाता है। पूजा पाठ की पूर्ण विधि भी हमें ठीक से पता नहीं है। और पूजन की सामग्री को जुटाना भी तकलीफ देय है इसलिए ऐसे समय में अपने प्रभु से जुडने का, उनको अपना बनाने का, उनका अपना बनने का सबसे सरल व सुगम तरीका प्रार्थना ही है।

प्रार्थना करने के लिए किसी विशेष आयोजन की अनुष्ठान की आवश्यकता नही है किसी विशेष स्थान व समय की जरूरत नहीं है। प्रार्थना तो कमी भी कही भी किसी भी समय की जा सकती है। पर फिर भी कोई नियत समय हम प्रभु प्रेम के लिये निकाले तो हमारी बात और भी बन जायेगी। जब कोई व्यक्ति प्रतिदिन जीवन पर्यन्त प्रार्थना करता है। तो शनैः शनैः उस मनुष्य की बुद्धि की भ्रान्ति जड़ता संकोच और भेदभाव नष्ट हो जाते है। इससे उसे परमानन्द की अनुभूति होने लगती है। परमानन्द की अनुभूति होने पर मनुष्य धीरे धीरे दैवीय गुणों से सम्पन्न हो जाता है। वह परमात्मा के वास्तविक तत्व को पहिचानने लगता है और अन्ततः वह जीवन मुक्त हो जाता है। यही जीवन की उपलब्धि है। अतः मानव मात्र को नियमित रूप से सुबह शाम दोनों समय प्रार्थना अवश्य करना चाहिये। ❋❋❋

16 अगस्त - 15 सितम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–पत्नि से मन-मुटाव होने की संभावना रहेगी। कारोबार में रुकावटें आयेंगी एवं हानि होना भी संभव है। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। सारी योजनायें असफल रहेंगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। नौकरी में बदलाव अधिक आने की संभावना रहेगी। व्यय अधिक रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रु आप पर हावी रहेंगे। यात्रा में कष्ट आयेंगे। मानसिक तनाव रहेगा। व्यय अधिक रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा। इस मास में नेत्र कष्ट, वायु विकार, जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। आर्थिक हानि होगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। चोट भी लग सकती है। मानसिक तनाव रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुओं पर हावी रहेंगे। अर्थलाभ की प्राप्ति होगी। पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– आर्थिक लाभ होगा। कारोबार उत्तम रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। योजनायें असफल होंगी। मानसिक तनाव रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– वायु विकार, नेत्र कष्ट जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। नौकरी में हानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। कारोबार में अधिक बदलाव होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। सन्तानपक्ष से चिन्तायें लगी रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति बनेगी। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- प्रियजनों से मेल-जोल बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में विशेष खर्च होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अगस्त	सितम्बर
17.हरियाली तीज, श्रावण सोमवार व्रत 18.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, मंगला गौरी व्रत 20.श्री नाग पंचमी 21.वरुण षष्ठी 22.गोस्वामी तुलसी दास जं. 23.दुर्गाष्टमी 24.श्रावण सोमवार व्रत 25.मंगला गौरी व्रत 26.पुत्रदा एकादशी व्रत 27.प्रदोष व्रत 29.पूर्णिमा, रक्षाबन्धन	2.कंजली तृतीया, श्री गणेश चतुर्थी व्रत 4.शीतला सप्तमी 5.श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत, गोगा नवमी, शिक्षक दिवस 8.अजा एकादशी व्रत, स्वामी शिवानंद जं. 9.गौवत्स द्वादशी, पं. गोविन्द बल्लभ पंत जं. 10.प्रदोष व्रत 11. श्री बिनोबा भावे जं. 13.अमावस्या व्रत (पोला त्योहार) 14.भा. हिन्दी दिवस 15.भा. इन्जीनियर्स डे

गृहारम्भ मुहूर्त

अगस्त –नही हैं। **सितम्बर**– नही हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त

अगस्त – नही हैं। **सितम्बर**– नही हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अगस्त – 16, 17, 20, 23, 27, 29

सितम्बर –नही हैं।

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अगस्त – 28

सितम्बर– नही हैं।

सर्वार्थ सिद्ध योग

अगस्त	सितम्बर
19 ता. सू.उ. से दोपहर 01:22 तक 28 ता. सू.उ. से सांय 06:05 तक	01 ता. सू.उ. से प्रातः 07:13 तक 05 ता. सू.उ. से रात्रि 12:09 तक 13 ता. दोपहर 01:20 से 14 ता. प्रातः 05:51 तक

16 सितम्बर - 15 अक्टूबर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस मास में आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। प्रियजनों मे से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। रक्त-पितर जैसे रोगो से आप ग्रस्त रहेंगे।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास मे आर्थिक होने की संभावना रहेगी। वृथाविवाद से दूर रहें। इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में पित्तविकार रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त मे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी। संबध में या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपका कारोबार ठीक ठीक चलेगाा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–इस माह में आपका शारीरिक स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु किर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– घरेलू परेशानिया निरन्तर बढ़ेगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें। आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु किर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

सितम्बर	अक्टूबर
16.हरतालिका तीज व्रत 17.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, विश्वकर्मा पूजन 18.ऋषि पंचमी 19.सूर्य षष्ठी 21.राधाष्टमी 22..हरि जयंती 24.जल झूलनी एकादशी व्रत 25.वामन द्वादशी, प्रदोष व्रत 27.पूर्णि. व्रत, अनन्त चतु., शिरडी वालेसाई बाबा जं., वि. पर्यटक दि. 28.पूर्णि. श्राद्ध पक्ष प्रा., प्रतिपदा श्राद्ध 29.द्वितिया श्राद्ध 30.तृतिया श्राद्ध, बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी	1.चतुर्थी श्राद्ध, श्री गणेश चतुर्थी व्रत 2.पंचमी श्राद्ध, महात्मा गांधी जं., लाल बहादुर शास्त्री जं. 3.षष्ठी श्राद्ध 4.सप्तमी श्राद्ध 5.अष्टमी श्राद्ध 6.नवमी श्राद्ध 7.दशमी श्राद्ध 8.एकादशी श्राद्ध, भा. वायुसेना दि. 9.द्वादशी श्राद्ध 10.प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध 11.चर्तुदशी श्राद्ध 12.अमावस्या श्राद्ध, सोमती अमा. 13.शरदीय नवरात्रा प्रारम्भ, अग्रसेन जयंती 15.द्वितिया नवरात्र

ग्रहारम्भ मुहूर्त

सितम्बर - नही हैं। **अक्टूबर**– नहीं है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

सितम्बर – नही हैं। **अक्टूबर**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

सितम्बर – 16, 20, 24, 25, 28

अक्टूबर – 15,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

सितम्बर –16, 20, 24, 28, 30

अक्टूबर– 4, 7, 12,

सर्वार्थ सिद्ध योग

सितम्बर	अक्टूबर
27 ता. रात्रि 08:52 से	03 ता. सू.उ. से प्रातः
28 ता. प्रातः 05:56 तक	07:26 तक
29 ता. दोपहर 02:58 से	11 ता. सू.उ. से 12 ता.
30 ता. प्रातः 05:58 तक	प्रातः 05:59 तक

शेष पेज 12 से आगे.....

कृष्ण के जीवन को किसी भी प्रकार की हानि पहुचाने में जब सफल नहीं हो सका तो उसने कृष्ण को मथुरा में ही बुलाकर उनके वध की योजना बनायी। कंस ने कृष्ण को लेने के लिये अक्रूर को माध्यम बनाया ताकि बिना किसी सन्देह के नन्द बाबा और कृष्ण मथुरा आ सके। नन्द बाबा तो मानो ऐसे अबसर की प्रतिक्षा में ही थे और वे कृष्ण बलराम तथा ग्वालों सहित मथुरा आ गये। कंस के कई दुष्ट सहयोगियों के बध के पश्चात् कृष्ण ने कंस का वध किया और वासुदेव देवकी को कारागर से मुक्त कर महाराजा उग्रसेन को मथुरा का राजा बना दिया।श्री कृष्ण ने कंस वध के उपरान्त मथुरा में ही रहने का निर्णय किया और नन्द बाबा को ग्वालों सहित अपने राज्य लौट जाने का आग्रह किया, जिसका उल्लेख ब्रह्म वैवत पुराण कृष्ण जन्म 90/65–70–74–75 में विस्तार से किया गया है। श्री कृष्ण बालपन में की गई लीलाओं का स्मरण नन्द बाबा को कराते हुए बाल रूपी हठ के वश किये गए कार्यो के लियें उनसे क्षमा मांगते हुए कहते है।

कुतस्त्वम् गोकुले वैश्यो नन्दो वैश्याधियों नृपः
वसुदेव सुतोऽहम् च मथुरा या महोकुतः
पिता में कंस भी तेन त्वद् गृहे च समर्पित :
पितुः पर पिता त्वं च माता मातु परापि वा
मयास्तेन गानेन पार्वष्या च बृजेश्वर :
त्यज मोहं महाभाग गच्छतात् सुखं गृहम्

हे बाबा कहां तुम वैश्य कुल में उत्पन्न गोकुल नरेश और कहां मैं मथुरा में जन्मा वासुदेव का पुत्र मेरे पिता ने कंस के भय से मुझे आपके घर भेज दिया। आप मेरे पिता से बढकर पिता एंव माता से बढ़कर माता है। हे बाबा मोह को त्यागकर आप सुख से अपने घर चले जाओं।

ब्रह्म वैवर्त पुराण के अंशों से स्पष्ट है कि

1. नन्द बाबा वैश्य कुल के थे।
2. ये गोकुल क्षेत्र के वैभव सम्पन्न एंव शक्तिशाली राजा थे।
3. उस समय कटटर जाति वाद नहीं था। परिणामस्वरूप यादव कुल के कृष्ण का पालन पोषण वैश्य कुल में हुआ था। उपरोक्त तथ्यों से एक और बात स्पष्ट होती है कि पूर्व में जातीयता को प्रधानता नहीं थी। कर्म ही सर्वोपरि था। त्रेतायुग में जहाँ ब्राह्मण वंशीय रावण लंका का शक्तिशाली राजा था, जो राक्षसीय वृत्ति के कारण अपयश का भागी बना– वहीं द्वापर युग में वैश्यवशींय नन्द बाबा गोकुल के शक्तिशाली प्रजा सेवी और संवेदनशील नरेश थे जो दैवीय गुणों के कारण जन जन के प्रिय और श्रद्धा के पात्र रहे। महाराजा अग्रसेन द्वारा महाभारत युद्ध के लगभग 20 वर्ष के पश्चात् अग्रोहा राज्य की स्थापना एंव गोकुल नरेश नन्द बाबा का वैश्य होना इस बात को प्रमाणित करता है कि महाराजा अग्रसेन नन्द बाबा के ही वंशज है। इस विषय पर शोध किए जाने की आवश्यकता है। ❋❋❋

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रूचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आर्युवैदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्राणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक विज्ञान, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक –पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है– भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल– pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

ज्योतिष❋, वास्तुशास्त्र एवं अंकशास्त्र सीखना हुआ अब बहुत ही आसान।
सीखें अब मात्र 3 महीने में।
बैच अक्टूबर 2015 से प्रारम्भ
(❋केवल शनिवार एवं इतवार)
फोन न. 9719666777, 9557775262

मेवाड़ विश्वविद्यालय व अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटीग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता – स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

शेष पेज 09 से आगे .....

हो जायेगी। ज्योतिषशास्त्र में शनि को भाग्य विधाता कहा गया है। भाग्य कर्म से बदलेगा। इसलिये व्यक्ति बडे बुजुर्गो से सलाह लेकर अच्छा कर्म करना चाहिये।

लाल किताब ने **राहु** को पापी तामसिक ग्रह की संज्ञा दी है राहु को अच्छा भी माना गया है राहु को साहस का ग्रह भी माना गया है। समाज में दो नम्बर का काम और कानूनी कार्य जो व्यक्ति करता है। वह राहु ग्रह से प्रभावित होता है। एक हिम्मती और साहसी व्यक्ति दो नम्बर का काम कर सकता है। गैर कानूनी काम करके व्यक्ति धन कमा लेता है लेकिन भगवान के घर से डरों। दोष लग जाता है। इसलियें राहु को ठीक रखने के लिये लाल किताब कहती है कि व्यक्ति को गैर कानूनी काम नही करना चाहियें। तथा बिजली की चोरी नहीं करना चाहियें अपने ससुराल, ननिहाल से अच्छा संबंध बनाकर रखना चाहियें। मुफत प्राप्त चीजे खाने से या जुगड करके प्राप्त चीजे का प्रयोग करने से राहु बुद्धि खराब कर देता है। जिस व्यक्ति के जन्मकुण्डली में मंगल शनि एक साथ बैठें होते है। उनका राहु उच्च होता है। हस्त रेखा के हिसाब से जिस व्यक्ति के हाथ पर रेखायें होती है या अंगुठा के ऊपर पट रेखायें होती है। उसका राहु खराब होता है। राहु का संबंध जाल से होता है और हाथ में जाल बनता है तब बेकार की चीजें सोचकर परेशान एंव बेचैन हो जाता है। वह काम तो अपने जीवन में कई करता है। लेकिन सफलता किसी से नहीं पाता है। राहु को ठीक करने के लिये व्यक्ति को बेकार की बात नही सोचनी चाहिये अपने काम की बात सोचों और अपने काम में मास्टरी दक्षता करके अपना काम करना शुरू कर दो अधिक सोचने से मन बेचैन होगा नींद नही आयेगी निराशा पैदा हो जायेगी। बैचैन व्यक्ति उदास एंव निराश व्यक्ति राहु से प्रभावित होते है ऐसे व्यक्तियों को बीर पुरूषों एंव बीरागनों की जीवनी पढनी चाहिये तथा हिम्मती और दिलेर होना चाहिये खराब राहु वाले व्यक्ति के ऊपर हिन्दी का यह मुहवरा लागू होता है कि कायर व्यक्ति अपने मौत से पहले ही घबरा कर मर जाता है। जब व्यक्ति का हाथ टेढा मोटा होता है। तब व्यक्ति चिन्ता निराशा में नही रहता है। बल्कि समाज में रहकर ऐसा काम कर बैठता है जिसे न समाज न परिवार न ही कानून ठीक मानता है लाल किताब राहु के बारे में बताती है कि टेढा हाथ अंगुलियां वाले व्यक्ति परिवार के हिसाब से कानून के हिसाब से समाज के हिसाब से जब सही काम कर देना शुरू कर देता है। तब उसका टेढा हाथ भी ठीक हो जाता है। राहु को कलयुग माना गया है। अगर कुंडली में राहु अच्छा नही होता है। तब व्यक्ति अच्छा वकील अच्छा डाक्टर राजनीतिज्ञ अच्छा व्यापारी अच्छा फिल्मकार नही बनता है। इसलिये राहु का आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि में स्वाति नक्षत्र तुला राशि शतभिषा नक्षत्र कुम्भ राशि में आता है। ये तीनों राशियां वायु तत्व से संबंध रखती है। वायु तत्व वाले व्यक्ति बहुत बुद्धि जीवी होते है और अपने ज्ञान और बुद्धि को दुनिया के सामने प्रदर्शित कर आम जनता को अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है अर्थात ऐसा व्यक्ति अपने कला के द्वार अपने पीछे लगा लेता है जिस प्रकार आज फिल्मकार क्रिकेटर कर रहें है।

केतु को लाल किताब शुभ ग्रह मानती है। लाल किताब कहती है कि केतु नवम या बारहवे घर में अच्छा फल करता है या गुरू के धनु राशि और मीन राशि में उच्च होता है। केतु के बारे में लाल किताब कहती है कि शनि के सामने केतु व्यक्ति की अच्छाई रखता है जबकि राहु व्यक्ति की बुराई रखता है। जिसका केतु अच्छा होता है। उसके घर के ऊपर तथा कार के ऊपर झण्डा लगा होता है। केतु गुरू के साथ बैठने से और भी अच्छा होता है जब केतु रोजगार को प्रभावित करता है।

तब व्यक्ति का रोजगार चलने फिरने से चलता है जैसे पाइलेट ड्राइवर विक्रय प्रतिनिधि बड़े अधिकारी चलने फिरने वाले अधिकारी आदि। जब केतु माध्यम होता है तब व्यक्ति पैदल चलता रहता है। भगवान ने अपने चक्र सुदर्शन के द्वारा राहु को काटा था तब सिर वाला भाग राहु बना और नीचे का भाग केतु बना। इसलिये जो व्यक्ति घूम फिरकर काम करते है या साधु सन्यासी बनकर भ्रमण करते है या भिक्षा मागते है वे व्यक्ति केतु से प्रभावित होते है। हस्तरेखा के हिसाब से जिसका हाथ चमसाकार होता है वह व्यक्ति भी एक जगह बैठकर काम नहीं कर सकता है। धूमता फिरता रहता है। जिसकी हथेली बहुत लम्बी होती है।वह व्यक्ति भी काम बहुत धीरे धीरे बात चीत करके गप्पे मार कर करता है। केतु के बारे में लाल किताब कहती है कि जिसका केतु खराब होता है उसके रीढ़ की हडडी में खराबी एंव पेसाब की बिमारी हो जाती है। शुक्र शनि अगर एक साथ बैठे होते है तब केतु उच्च हो जाता है। चन्द्र शनि के साथ बैठा होते है तब केतु नीच का होता है। जिस व्यक्ति का चाल चलन चरित्र अच्छा होता है उसका केतु अच्छा हो जाता है। अगर व्यक्ति गन्दी जुबान बोलना बन्द कर देता है। झुठा वादा नही करता भान्जे भतीजे की मदद करता है। अच्छा सम्बन्ध रखता है। तब इसका केतु अच्छा होता है।

इस प्रकार लाल किबात ने सभी ग्रहो के लिये आसान और अच्छा उपाय लिखा है जिससे कारक फलादेश भी आ जाता है तथा अपनी आदतों में सुधार करके ग्रहों के बुरे प्रभाव को ठीक कर लेता है। लाल किताब वैदिक ज्योतिष की सहायक है जिस प्रकार आयुवेदिक दवाई अंगेजी दवाई की सहायक होती है। उसी प्रकार लाल किताब वैदिक ज्योतिष के फल और उपाय को आसान तरीका बता देती है। ❋❋❋

ज्योतिष❖, वास्तुशास्त्र एवं अंकशास्त्र सीखना हुआ अब बहुत ही आसान।
सीखें अब मात्र 3 महीने में।
बैच अक्टूबर 2015 से प्रारम्भ
(❖केवल शनिवार एवं इतवार)
फोन न. 9719666777, 9557775262

शेष पेज 04 से आगे.....

2. नौकरी मिलना व नौकरी में प्रमोशन के लिये।

3 व्यापार वृद्धि एंव व्यापार मे सफलता प्राप्ति करने के लिये।

4. ऋण समाप्त होने एंव निरन्तर आर्थिक उन्नति के लिये।

5. जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण भौतिक सुख संपन्नता एंव सफलता के लिये।

6. स्वंय का मकान होने व वाहन प्राप्ति के लिये।

चौथा सोमवार–दिनांक 24–08–2015 को श्रावण का चौथा सोमवार है। इस सोमवार को विलक्षण फल देने वाले योग बन रहे है जोकि अपने आप में महत्वपूर्ण है ऐसे ही योगो से सम्पन्न होने के कारण ही यह सोमवार भी अति महत्वपूर्ण है। अतः ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्वेश्यों की पूर्ति के लिये प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते है।

1. मनोवांछित पति पत्नि की प्राप्ति के लियें।

2. मनोवांछित पुरूष या स्त्री की हमेशा हमेशा के लिये अपने अनूकूल बनाने के लिये।

3. पारिवारिक कलह दूर करने के लिये व गृहस्थ जीवन में पूर्ण अनुकूलता के लियें।

4. घर में पितृ दोष, ग्रह दोष, तांत्रिक दोष, आदि समाप्त करने के लिये।

5. किसी भी प्रकार की साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये।

उपयुक्त कार्यों की सिद्धि के लियें यह सोमवार अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और प्रत्येक साधक इस सोमवार का विशिष्ट तरीके से प्रयोग संपन्न कर लाभ उठा सकता है। वस्तुतः यह चारो सोमवार भगवान शिव की साधना से सम्बन्धित है और शिव साधना के द्वारा ही विशेष साधना सम्पन्न कर मनोवाछित उद्वेश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। ❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे.....

अवश्य लगाना चाहिए।

23. भवन के मुख्य द्वार पर ऊँ, मंगल कलश, मछली का जोडा स्वास्तिक, बन्धनवार, शुभ चिन्हों से जाना अति शुभकारी एंव समृद्धिदायक है।

24. रसोई घर में दवा न रखें और दर्पण न लगायें क्योकि आग का अतिबिम्ब इसमें आ सकता है जो कि खतरे का सूचक है।

25. उत्तर पूर्व एंव ईशान में सभी प्रकार के सुगंधित पुष्प देने वाले पौधे उगाने चाहिये।

26. वैज्ञानिक दृष्टि कोण से देखा जाय तो भोजन कीटाणु व जीवाणु रहित पौष्टिक तथा संतुलित होना चाहिये जिससे व्यक्ति को भरपूर ऊर्जा प्राप्त हो यह तभी संभव है जब भोजन बनाने वाला स्वंय शुद्धि का ध्यान रखें।

27. घर के सभी लोग आपसी मेल जोल से रहे। कहा गया है जहाँ सुमति तँह सम्पति नाना और जहाँ कुमति तक विपति निदाना।

❋❋❋

शेष पेज 05 से आगे.....

नियमित शनि स्त्रोत का पाठ व शनि यन्त्र का पूजन करें। रोजाना पक्षियों को बाजरा चुगायें व सड़क के कुत्तों को रोटी ब्रेड खिलायें।

16. खून निकलना, मस्तिष्क पर चोट लगना वाहन से दुर्घटना होना मंगलग्रह की अशुभता के कारण होता है। नियमित रूप से त्रिकोण मंगल यंत्र की पूजा करें व मंगलवार को हनुमानजी के दर्शन करने से इस समस्या से छुटकारा मिलता है।

17. घर के अग्नि कोण में किसी प्रकार का दोष होने पर ही स्त्रियाँ रोग से ग्रासित हो जाती है। अतः अग्निकोण का शुभ होना जरूरी है।

18. अच्छे स्वास्थ्य हेतु सदैव अपने लग्नेश के रंग के वस्त्र धारण करे अपने कमरे पर्दो चादरों इत्यादि का रंग भी लग्न के अनुसार ही रंखे। इससे भी स्वास्थ्य पर शुभ प्रभाव पड़ता है।

आशा है उपरोक्त बिंदुओ से आपको अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखने मे सहायता आवश्य प्राप्त होगी। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

किसी भी परिस्थिति में सम्मान पाने की उत्पति होती है इस आवश्यकता में आंतरिक सम्मान, आत्म सम्मान, उपलब्धि, स्वायन्तता, बाहय सम्मान कारक, पद कदरदानी आदि आवश्कताएं सम्मिलित है। जैसे आजकल के बच्चे किसी रिश्तेदार के सामने अपने माता पिता द्वारा डांटे जाने पर अपना अपमान महसूस करते है। वह अनुभव करते है कि हमारे माता पिता द्वारा हमें सम्मान नहीं दिया गया।

आत्म सिद्धि की आवश्यकता– यह व्यक्ति की अंतिम और पांचवी आवश्यकता है। इसमें व्यक्ति अपने अंदर छिपी क्षमताओं व प्रतिभाओं की पहचान करके उन्हे विकसित करना चाहता है। अपनी क्षमताओं या प्रतिभाओं को विकसित करने की आवश्कता को ही आत्मसिद्धि कहा जाता है। कभी–कभी कुछ व्यक्तियों के जीवन में ऐसी परिस्थितियां आती है जिसके कारण यह आवश्यकता पूरी नही हो पाती है। यह आवश्यकता व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में पूर्ण सहायक होती है।

यह वह आवश्कताएं है जो हमारे जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक है जैसे जैसे बच्चा बडा होता है उसे ये सारी आवश्कतायें अपने जीवन में महसूस होने लगती है और उसकी यह सभी आवश्यकताऐं उसके माता पिता द्वारा पूरी की जाती है। जैसे भोजन वस्त्र इत्यादि लेकिन काम इच्छा हमारी प्रकृति की देन है जो स्वाभाविक रूप से उम्र के अनुसार बच्चे के अंदर आती है। और उम्र के अनुसार ही सुरक्षा के दृष्टिकोण से देखा जाये तो बच्चे को स्कूल छोडकर आना व स्कूल से लेकर आना और साथ ही बच्चे के बडा होने उन्हे बात बात पर समझाना। बच्चे को बहुत स्नेह व प्यार के साथ बडा किया जाता है जैसे– जैसे बच्चा बडा होता है उसे सिखाया जाता है प्यार व स्नेह लेना भी है और देना भी है जिससे धीरे धीरे बच्चे में आत्म सम्मान की भावना भी आ जाती है। किसी के सामने दूसरो के द्वारा अपशब्द बोले जाने पर वह अपना अपमान भी महसूस करते है। बच्चा जैसे जैसे बडा होता है। तो उसमें स्वंय ही यह भावना विकसित होने लगती है कि कुछ किया जाये जैसे उन्हें क्या पंसद है या बडे होकर क्या करना है जिसके अनुसार उनके व्यक्तित्व का विकास भी होता है। ❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या खाते में जमा कर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262